International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 848-852

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 848-852
www.allresearchjournal.com
Received: 05-08-2020
Accepted: 07-09-2020

अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, भारत

कालिदास के काव्य की विशेषताएँ

अनुज कुमार

प्रस्तावना:

कालिदास के रचनाओं के आधार पर उनकी काव्यशास्त्रीय विशिष्टताओ का अवलोकन किया जा सकता है। उन्हे केवल प्रशंसा के लिए कविकुलगुरु, उपमाकालिदासस्य या कविताकामिनीविलास नहीं कहा गया है। भारतीय संस्कृति के प्रति गहन निष्ठा रखने वाले कवि ने आनन्द को जीवन–दर्शन मानकर उसके साधन के रूप में काव्य रचना की। इसी आनन्द को उन्होने अपने रचनाओं में विस्तार प्रदान किया। शब्दों के मिथ्याडम्बर में न जाकर उन्होने प्रसाद गुण से पूर्ण ललित पदावली का निवेश किया जो **'चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः'** के नियम से अकस्मात् हृदय को अवर्जित कर लेती है। इनके कविता शैली में समासों का अल्पत्व पदों का समुचित स्थान पर निवेश अनुप्रास न रहने पर भी अनुपम नाद–सौन्दर्य एवं भावों का सहसा स्फुरण ये विशिष्ट गुण तो वहिरङ्ग दृष्टि से ही प्रकट होते है। इसी तरह से कालिदास के काव्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं––

(१) ध्वनि –

कालिदास के काव्यों की गणना ध्वनि – काव्य के अन्तर्गत की जाती है। काव्यमीमांसकों ने ध्वनि – काव्य को उत्तम काव्य माना है। अभिधेय एवं लक्ष्य अर्थ के अतिरिक्ति सहृदयहृदयवेद्य अर्थ के बोधक काव्य को ध्वनि काव्य कहते हैं। ऋषि अङ्गिरा हिमालय से पार्वती की मँगनी का प्रस्ताव करते हैं। समीप ही बैठी पार्वती सब कुछ सुन रही है। आकार एवं चेष्टाओं द्वारा उसकी मानसिक स्थिति का अद्भुत चित्रण कालिदास की लेखनी से इस प्रकार हुआ है –

'एवं वादिनि देवर्षौ पार्श्वे पितुरधोमुखी।
लीलाकमलपत्राणि गणयामास पावती॥' [1]

(जब देवर्षि ऐसा बोल रहे थे तब पिता हिमालय के बगल में मुँह झुकाये बैठी पार्वती लीलाकमलों की पंखुड़ियों को गिनने लगी)। पिता के पास बैठी पार्वती का सिर नीचा कर लेना एवं कमल की पंखुड़ियों को गिनने लगना उसकी लज्जा, आनन्द, प्रस्ताव की स्वीकृति एवं कोमलता का द्योतक है। कमल की पंखुड़ियों को गिनना प्रारम्भ करना यह सूचित करता है जैसे वह प्रस्ताव को सुन नहीं रही है अपितु किसी दूसरे कार्य – पत्रगणना में लगी हुई है, तथापि सिर झुका लेने से उसकी मानसिक स्थिति को बखूबी पढ़ा जा सकता है। बहाना भी समझ लिया गया। ऐसे प्रसङ्गों में सम्बद्ध व्यक्ति का बहाना समझ लेना भी सहृदयों के लिए आनन्द का विषय बन जाता है। कालिदास ने यहाँ पार्वती से कमलपत्रों की गणना करवाई है। इससे उसका अङ्कुरित यौवन ध्वनित होता है ; क्योंकि लज्जा होने के कारण वह निरी अबोध बालिका भी नहीं है और लीला –

कमलों का सम्पर्क होने के कारण उसका बचपना भी स्वभाव में है यह ध्वनित होता है। कमलों से लीला का सम्पादन करने वाली बाला का हृदय कितना अधिक कोमल होगा !
प्रस्तावकाल में पार्वती लीला - कमलों को या लीला - कमल को खेलने नहीं लगती जिसके निमित्त वे होते हैं अपितु गिनने लगती है ; क्योंकि यदि वह लीला - कमल खेलने लगती तो लज्जा का बोध न होता तथा प्रस्तावववस्तु को वह पूर्णतः समझ न सकती। पत्रगणना के कार्य से यह ध्वनित होता है कि वह निर्विघ्न तथा सावधानी से प्रस्ताव को सुनती हुई भी उसका गोपन कर रही है।
'अभिज्ञानशाकुन्तल' की प्रस्तावना में ग्रीष्म ऋतु के दिनों का वर्णन करता हुआ सूत्रधार कहता है –

'सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः।
प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीयाः॥' [2]

सुखान्त 'दिवसाः परिणामरमणीयाः' से यह ध्वनित होता है कि यह नाटक भी है। इसका फल (अन्त) रमणीय है। 'दिवसाः' के अन्य सभी विशेषणों का सम्बन्ध त्वगिन्द्रिय के विषय स्पर्श से है। ग्रीष्म ऋतु के दिनों में जल में स्नान करते अच्छा लगता है (जलस्पर्श); पाटल के सम्पर्क से वन की वायु मुगन्धित है (सुगन्धितवायु का स्पर्श) तथा छाया में नींद अच्छी आती है (छाया – स्पर्श)। (यहाँ 'निद्रा' पद दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला के विस्मरण का भी बोधक है)। ग्रीष्म ऋतु के ऐसे दिनों में किसी भी व्यक्ति का, असामान्य रूप देखकर, 'स्पर्श' – हेतु साकाङ्क्ष होना स्वाभाविक है, ध्वनित होता है। दुष्यन्त के विषय में यही घटना घटी।
इसी नाटक के चतुर्थ अङ्क में

'अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
परभृतविरुतं कलं यथा प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्॥' [3]

वृक्षों ने कोयल के स्वर के द्वारा शकुन्तला को बिदाई दे दी। शकुन्तला को वृक्षों के प्रति सोदर स्नेह था क्योंकि शकुन्तला की भाँति ये वृक्ष भी जनक जननी द्वारा संवर्द्धित नहीं हैं। दोनों की समान परिस्थितियाँ एक दूसरे के प्रति समवेदना का कारण हैं। यदि शकुन्तला का भरणपोषण उसके अपने माता – पिता ने नहीं किया अपितु दूसरे (कण्व) ने किया और इस प्रकार वह 'परभृतो' हुई तो कोयल भी तो 'परभृत' है। फिर क्यों न वह समवेदना के स्वरों में कूज उठे। दिलीप वसिष्ठ की धेनु – नन्दिनी को वन से चराकर लौटे तो दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा ने बिना पलक मारे ही अपनी उपवास रही जैसी आँखों से दिलीप को पी लिया अर्थात् देखा' –

वसिष्ठधेनोरनुयायिनं तमावर्तमानं वनिता वनान्तात्।
पपो निमेषालसपक्ष्मपतिरुपोषिताभ्यामिव लोचनाभ्याम्॥ [4]

यहाँ 'उपोषित' शब्द द्वारा यह तो बोध होता ही है कि जैसे उपवास के समय अधिक तृष्णा होती है उसी प्रकार अधिक देर तक दिलीप से वियुक्त रहने के कारण सुदक्षिणा को दिलीप – दर्शन की अतीव उत्कण्ठा थी किन्तु यहाँ व्यङ्गय अर्थ यह है कि सुदक्षिणा के लिए दिलीप का वियोग उपवास के समान है – इष्ट है। दिलीप गाय चराने के लिए गये हैं जो एक पुण्य कर्म है। उपवास में जल नहीं पिया जाता तथापि जहाँ जलपान के अभाव में कष्ट रहता है वहीं धार्मिक कृत्य के सम्पादित होने के कारण प्रसन्नता एवं उत्साह भी रहता है। दिलीप का वियोग सुदक्षिणा के लिए उत्कण्ठा का कारण अवश्य है किन्तु वह वियोग एक महान् धार्मिक कृत्य – गोचारण – के सम्पादन का हेतु है, इससे महान आनन्द एवं सन्तोष है। अतः वियोग की इष्टता प्रदर्शित करने के लिए **'उपोषित'** पद का प्रयोग महाकवि ने किया है।
तपोलीना पार्वती के ऊपर गिरी हुई वर्षा की पहली बूंदें जिस प्रकार उसके पलकों पर थोड़ा सा अटक कर होते – होते नाभि तक पहुँचती हैं उसका वर्णन देखिए–

स्थिताः क्षणं पक्ष्मसु ताडिताधराः पयोधरोत्सेधनिपातचूर्णिताः।
वलीषु तस्याः स्खलिताःप्रपेदिरे चिरेण नाभिं प्रथमोदविन्दवः॥' [5]

अभिप्राय यह है कि बूंदें पलकों पर क्षण भर के लिए रुककर अधरों पर गिरती हैं और उन्हें आघात पहुँचाया और फिर स्तनों पर गिरकर चूर–चूर हो गई ; तत्पश्चात् त्रिबली में रेंगती हुई बड़ी देर में जाकर नाभि में समाहित हो गई। प्रकृत श्लोक के 'क्षण' पद से पलकों की चिकनाहट व्यङ्ग्य है। इसी प्रकार 'ताडित' पद से अधर की कोमलता, 'चूर्णित' पद से कुचकाठिन्य, 'स्खलित' पद से त्रिवली की सुष्ठता एवं 'नाभिं प्रपेदिरे' पदों से नाभि की गहराई व्यङ्ग्य है।

(२) रस –
वैसे तो कालिदास के ग्रन्थों में समस्त रसों का समावेश है किन्तु रसराज–शृङ्गार की प्रधानता महाकवि के काव्यों में है। (१) संभोग शृङ्गार – संभोग शृङ्गार का एक उदाहरण प्रस्तुत है। शकुन्तला के अप्रतिम सौंदर्य को देखकर अत्यधिक मुग्ध हुआ दुष्यन्त कहता है

'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्पमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥' [6]

अर्थात् शकुन्तला का रूप क्या है ? बिना सूंघा हुआ फूल ; नाखूनों से जिसे खोटा नहीं गया है ऐसी नयी पत्ती ; ऐसा रत्न

जिसमें छेद नहीं किया गया है ; नया शहद जिसका रस नहीं चखा गया है। पुण्यों का अखण्ड फल जैसा है वह रूप। पता नहीं ब्रह्मा किस व्यक्ति को ऐसे अनिन्द्य रूप का भोग करने के लिए प्रस्तुत करेगा। (२) विप्रलम्भ शृङ्गार – विरहविधुर यक्ष कहता है कि मैं विरहपीडिता अतएव प्रणयकुपिता प्रियतमा का चित्र धातु (गेरू आदि) से प्रस्तरखण्ड पर चित्रित करके उसके पैरों पर गिरकर क्षमा याचना करना ही चाहता था कि वैसे ही मैं इतना भावविह्वल हो गया कि आँखों में आँसुओं की बाढ़ आ गई और प्रियाचित्रण कर्म रुक गया। निष्ठुर दैव को यह भी सह्य नहीं कि चित्र के माध्यम से ही हमारा प्रिया से समागम हो जाये–

'त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागैः शिलाया–
मात्मानं ते चरणपतितं यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्तः॥ ' [7]

शृङ्गार के अतिरिक्त प्रायः अन्य सभी रसों का भी प्रसङ्गतः कालिदास के ग्रन्थों में समावेश हुआ है।

(३) वैदर्भीरीति –

विशिष्ट पदरचना को '**रीति**' कहा जाता है। वैदर्भी पाञ्चाली तथा गौडी ये तीन रीतियाँ हैं। इनमें से सर्वश्रेष्ठ '**वैदर्भी**' है क्योंकि इसमें तीनों गुण – माधुर्य, ओज एवं प्रसाद – पाये जाते हैं। कालिदास की भाषा में श्रुतिमाधुर्य, पदलालित्य, स्वाभाविकता एवं सरलता के दर्शन होते हैं। दीर्घ समास, क्लिष्टकल्पना, कृत्रिमता एवं पाण्डित्यप्रदर्शन का सर्वथा अभाव है।

(४) मनोविज्ञान –

कालिदास मानव एवं पशु – पक्षियों के मनोभावों के ज्ञाता हैं। अभिज्ञानशाकुन्तल के प्रथम अङ्क में भागते हुए हिरन का '**ग्रीवा भङ्गाभिरामं...**" इत्यादि श्लोक द्वारा वर्णन उसकी मनः स्थिति का कैसा समीचीन चित्रण है। शकुन्तला द्वारा परिपालित मातृविहीन हरिणशावक पतिगृह जाती हुई शकुन्तला के कपड़े में चिपट जाता है – ' **को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते**। [8] मृग का छौना अपनी माता को खाज रहा है, बड़ी उत्कण्ठित दृष्टि से शकुन्तला की सखियों की ओर देख रहा है – **अनसूये ! इतो दत्तदृष्टिरुत्सुको मृगपोतको मातरमन्विष्यति। एहि संयोजयाव एनम्।** [9]

कालिदास की प्रसिद्धि तो प्रमुखतः मानव – मनोभावों के चित्रण पर निर्भर है। विभिन्न दशाओं में मनुष्य के हृदय में कैसे विचार उठते हैं इसका जितना सफल चित्रण कालिदास की कृतियों में हुआ है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। शकुन्तला के लावण्य पर दुष्यन्त इतना अधिक मुग्ध हो जाता है कि उसे ऐसा लगता है मानो वह शकुन्तला के पीछे – पीछे जाकर पुनः लौट आया हो, यद्यपि मर्यादा का विचार करके वह अपने स्थान से किञ्चिन्मात्र भी नहीं हटा। मर्यादा ने भौतिक शरीर को तो जाने से रोक लिया किन्तु दुष्यन्त के मन को सशरीर जाने से न रोक सका–

अनुयास्यन्मुनितनयां सहसा विनयेन वारितप्रसरः।
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः॥' [10]

'अभिज्ञानशाकुन्तल ' के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर कण्व, शकुन्तला और शकुन्तला की सखियों के हृदयगत भावों का; सप्तम अङ्क में भरत को देखकर तथा उससे शनैः–शनैः वार्तालाप करते समय दुष्यन्त की मानसिक स्थिति का चित्रण अतीव स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण है।

(५) अलौकिक तत्त्व –

कुबेर द्वारा यक्ष को शाप दिया जाना एवं तदनुसार यक्ष की महिमा का लोप, दुर्वासा द्वारा शकुन्तला को शाप, दुष्यन्त की इन्द्र से मैत्री, इन्द्र के सारथी मातलि का धरती पर आना, अप्सराओं का सम्पर्क, कण्व की दिव्य शक्ति द्वारा वृक्षों से शृङ्गार–सामग्री की प्राप्ति, पुरूरवा का अप्सरा उर्वशी से सम्पर्क इत्यादि ऐसी घटनायें हैं जो आधार तत्कालीन विश्वास एवं कथानक को रोचक बनाना है।

(६) भारतीय संस्कृति का चित्रण –

कालिदास की रचनाओं में भारतीय संस्कृति का व्यापक चित्रण है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष सभी के प्रति महाकवि का समान पक्षपात है। राजधर्म, तपस्विव्रत, वर्ण एवं आश्रम आदि के धर्मों का व्यापक चित्रण महाकवि ने किया है। दुष्यन्त वर्ण आश्रमधर्म की रक्षा करते हुए अपने राजधर्म का पालन करते हैं – '**असावत्रभवान् वर्णाश्रमाणां रक्षिता प्रागेव मुक्तासनो वः प्रतिपालयति**। [11] अन्त में मुक्ति के प्रति लक्ष्य का उद्घोष – **ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः** [12] इस भरतवाक्य में किया गया है। कौत्स एवं वरतन्तु का कथानक, दिलीप की गुरुगोसेवा, ऋषियों एवं मुनियों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान, राजा द्वारा प्रजा – पालन, मर्यादित भोग, धर्म के लिए कष्ट सहन करना आदि विषयों से कालिदास के ग्रन्थ भरे हुए हैं।

(७) विनोद एवं रोचकता –

कालिदास के काव्यों में विनोद का पुट भी समुचित मात्रा में है। विदूषक के अतिरिक्त अन्य पात्रों में भी विनोद प्रियता देखी जाती है। 'मालविकाग्निमित्र' में '**बकुलवलिका**', 'विक्रमोर्वशीय' में **चित्रलेखा** तथा 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की **प्रियंवदा** अतीव विनोदप्रिय पात्र हैं।

शकुन्तला अनसूया से कहती है कि सखी, प्रियंवदा ने वल्कल को अधिक कसकर बाँध दिया है, जरा ढीला तो कर दो। ऐसा सुनकर प्रियंवदा विनोद करती है – '**अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व** (अर्थात् – स्तनों को विकसित करने वाली अपनी जवानी को उलाहना दें। (मुझे क्यों ?)। प्रियंवदा कहती है कि शकुन्तला ' वनज्योत्स्ना ' नामक लता को इसलिए बड़े गौर से देख रही है कि जैसे वनज्योत्स्ना को अनुरूप वर मिल गया वैसे मुझे (शकुन्तला को) भी मिल जाये – '**यथा वनज्योत्स्ना नुरूपेण पादपेन सङ्गता अपि नामैवमहमप्यात्मनोऽनुरूपं वरं लभेयेति**। [13]

(८) सूक्तियाँ –

महाकवि के सभी काव्यों में प्राप्त अत्युत्कृष्ट सूक्तियाँ संस्कृत साहित्य की अनुपम निधि हैं। प्रेमी तथा प्रेमिका एक दूसरे को चाहते हैं यह समझकर ही उन्हें आनन्द मिलता है, भले ही उनका समागम न हो पा रहा हो – **अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते।** [14] गुणी व्यक्ति से याचना करनी उचित है, चाहे सफलता भले ही न मिले किन्तु सफलता की आशा होने पर भी अधम व्यक्ति से याचना करना उचित नहीं **याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।** [15] समझदार आदमी किसी विषय के गुण–दोष आदि का निर्णय स्वयं उस विषय की परीक्षा द्वारा करता है किन्तु मूढव्यक्ति की बुद्धि दूसरों के निर्णय का अनुसरण करती है **सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।** [16] विकार का अवसर प्रस्तुत होने पर भी जिन लोगों के चित्त में विकार न उत्पन्न हो वे ही धीर कहे जाने चाहिए – **विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।** [17] गुरुओं की आज्ञा का पालन बिना विचार किये बिना सदेह – बिना परीक्षण किये करना चाहिए – **आज्ञा गुरूणां ह्यविचार णीया।** [18]

(९) प्रगाढ़ पाण्डित्य –

कालिदास की कृतियों का मनन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि उनका ज्ञान बहुमुखी था। उन्हें वैदिक साहित्य, स्मृति, धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, आयुर्वेद, अनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, चित्रकला, ज्योतिष, युद्धविज्ञान, राजनीति, साहित्यशास्त्र, कामशास्त्र आदि का प्रौढ़ ज्ञान था।

(१०) कथानक में स्वाभाविक प्रवाह –

कालिदास की कृतियों का कथानक सरस एवं स्वाभाविक है। इसका कारण यह है कि एक के बाद दूसरी घटनायें या कथायें बलपूर्वक नहीं आतीं अपितु पूर्व कथा से ही दूसरी कथा अङ्कुरित होती है। जैसे आतिशबाजी के एक प्रकाशचक्र से द्वितीय प्रकाशचक्र अनायास उद्भूत होता है वैसे ही कालिदास के कथानक की घटनायें और उपकथायें हैं।

(११) राष्ट्रियता –

कालिदास राष्ट्र–कवि हैं क्योंकि एक राष्ट्रिय–कवि में जो गुण होने चाहिए वे सभी कालिदास में एक साथ हैं। उनकी दृष्टि व्यापक एवं उदार है। उनके ग्रन्थों में उन तत्वों का समावेश है जिनके आधार पर राष्ट्र समुन्नत हो सकता है। भारत के प्रहरी हिमालय का चित्रण, रघुवंश में सूर्यवंशीय राजाओं का चरित्र–चित्रण, कुमारसंभव में शिव का संयम तथा कार्तिकेय द्वारा ताड़क से मोर्चा लेकर उसका वध, अभिज्ञान शाकुंतल में दुष्यन्त की धर्मभीरुता एवं कर्तव्यपरायणता, कण्व द्वारा शकुन्तला को उपदेश, मेघदूत में यक्ष के अधिक भावुक होने का परिणाम एवं उसका सदाचार आदि ऐसे प्रभूत विषय हैं जो हमारे राष्ट्र को अविरत प्रेरणा देने में एवं उसे सबल बनाने में सक्षम हैं। महाकवि के काव्यों से हमें आनन्द का आस्वाद होता है तथा राष्ट्र के कल्याण का उपदेश मिलता है अतः हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र को अपने कालिदास पर गर्व है।

(१२) छन्द एवं अलङ्कार –

कालिदास ने प्रायः सम्पूर्ण प्रमुख छन्दों एवं अलङ्कारों का उपयोग किया है। यमक, अनुप्रास, रूपक, स्वभावोक्ति, विशेषोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, पर्यायोक्ति, दृष्टान्त, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि सभी प्रमुख अलङ्कारों का सफल समावेश महाकवि की कृतियों में पाया जाता है।

(१३) कालिदास के दोष –

आलोचकों की दृष्टि में कालिदास की कृतियों में पाये जानेवाले मुख्य दोष ये हैं–

(१) अश्लीलता – कुमारसंभव में शिव–पार्वती के संभोग शृङ्गार का वर्णन तथा मेघदूत के **ज्ञातास्वादो विवृतजघना को विहातुं समर्थः** [19] (रतिरस को चखा हुआ कौन ऐसा पुरुष होगा जो खुली हुई जाँघवाली स्त्री को देखकर बिना संभोग किए ही छोड़ दे) आदि स्थलों में अश्लीलता का दोष खटकता है।

(२) व्युतसंस्कृति – व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध शब्द के प्रयोग को 'च्युतसंस्कृति' दोष कहा गया है। कालिदास ने कतिपय स्थलों पर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो पाणिनीय व्याकरण से सम्मत नहीं हैं। यथा – '**कामयमान**' शुद्ध रूप के स्थान पर '**कामयान**' इस अशुद्ध रूप का प्रयोग – **राजयक्ष्मपरिहानिराययौ कामयानसमवस्थया तुलाम्।** [20]

(३) अनौचित्य – यद्यपि कालिदास के काव्य में 'आचित्य' का आश्चर्य जनक उत्कर्ष है तथापि एक आध स्थल पर वे चूक गये हैं देखिए

> '**क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद् गिरः खे मरुतां चरन्ति।**
> **तावत्स वह्निभवनेत्रजन्मा भस्मावशेष मदनं चकार॥** [21]

यहाँ महादेव की नेत्राग्नि से काम को भस्म कर दिये जाने की बात कही, गई है फिर भी महादेव के लिए उत्पत्तिबोधक 'भव' शब्द का प्रयोग किया गया है न कि संहारबोधक किसी शब्द का।

(४) रसदोष – कालिदास की कृतियों में कतिपय स्थलों में रसदोष मिलता है। इसके अतिरिक्त अन्य दोषों के भी दर्शन होते हैं तथापि कालिदास के काव्यों की समग्र गुणसम्पत्ति के समक्ष में दोष वैसे ही नगण्य हो जाते हैं जैसे सूर्य की किरणराशि के समक्ष चन्द्रकिरणें।

'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥' [22]

सन्दर्भ सूची

1. कुमारसम्भवम् –6.84
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– 1.3
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–4.10
4. रघुवंशम् –2.19
5. कुमारसम्भवम् –4.24
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 2.10
7. उत्तरमेघः –45
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चतुर्थ अङ्क
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, तृतीय अङ्क
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, – 1.26
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 5
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम् –7
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 1
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम् –2
15. पूर्वमेघः– 6
16. मालविकाग्निमित्रम्– 1.2
17. कुमारसम्भवम्– 1.59
18. रघुवंशम्–14.43
19. पूर्वमेघः–45
20. रघुवंशम्– 19.50
21. कुमारसम्भवम्– 3.72
22. इर्षचरितम्